International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 293-298

गठबंधन सरकार का महत्व और चुनौतियाँ

डॉ. सरोज सीरवी*

प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में संसदात्मक शासन पद्धति को अपनाया गया है। संसदात्मक लोकतन्त्र की विशेषता के साथ बहुदलीय व्यवस्था को भी अपनाया है। भारत में बहुदलीय व्यवस्था होने से निर्वाचन में अनेक राजनीतिक दल तथा निर्दलीय प्रत्याशी भाग लेते हैं। जैसे– कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी दल, आप पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, साम्यवादी दल, निर्दलीय आदि–आदि। संसदीय परम्पराओं के अनुसार आम चुनाव के पश्चात संसद के निम्न सदन में जिस राजनीतिक दल का बहुमत होता है, उसी दल के नेता को सरकार (मंत्रिमण्डल) बनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है। लेकिन जब लोकप्रिय सदन के चुनाव मे किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होता, त्रिशंकु लोकसभा की स्थिति बनती है, तब राजनीतिक दलों और दलीय नेताओं के बीच गठबंधन को जन्म देने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और गठबंधन राज्य के प्रधान को अपना बहुमत से आश्वस्त कर देता है, उस गठबंधन के नेता को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है और गठबंधन का नेता, प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री मिलीजुली सरकार का गठन करता है। गठबंधन सरकार एक ऐसी सरकार होती है, जिसमें कम से कम दो या दो से अधिक संख्या 3, 5, 8, 10, 15, 20 या इससे भी अधिक राजनीतिक दल हो सकते हैं। ये गठबंधन चुनाव के पूर्व या चुनाव के पश्चात् बना सकते हैं। गठबंधन एक अस्थायी प्रबन्ध होता है जो सत्ता व शक्ति प्राप्त करने के लिए बनते हैं। इसमें कठोर सिद्धान्तवादी राजनीति के लिए कोई स्थान नहीं होता। गठबंधन सरकार की संकल्पना और प्रबंधन में मूलभूत विकासशीलता होती है। ऑग के अनुसार– ''मिलीजुली सरकार एक ऐसे सहयोगी प्रबंध का नाम है, जिसमें विभिन्न सदस्य सरकार के गठन या मंत्रिमण्डल के निर्माण के लिए एक हो जाते है।'' ''मिलीजुली सरकार राजनीतिक समुदायों तथा शक्तियों का गठजोड़ है जो अस्थायी और कुछ विशिष्ट प्रयोजनो ंके लिए होता है। राजनीतिक दलों का यह मिलन सरकारों के निर्माण या उनकी रक्षा करने के लिए बनाया जाता है। जिन दलों के सहयोग के फलस्वरूप संयुक्त सरकारों का निर्माण होता है वे एक बुनियादी राजनीतिक कार्यक्रम पर एकमत होते हैं।''

भारत में साझा सरकारों की उत्पत्ति के मूल में भारतीय संस्कृति की विविधतापूर्ण प्रकृति भी उत्तरदायी कारक है। भारत में विद्यमान सांस्कृतिक व सामाजिक कारकों व बहुदलीय व्यवस्था के कार्य–कारण की पृष्ठभूमि में गठबंधन सरकारों की आवश्यकता एवं अनिवार्यता देखने को मिलती है। भारत में 1952 से 1967 तक कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार रहा। परन्तु 1967 के चौथे आम चुनावों में स्थिति बदल गयी। 1967 के बाद तो सत्ता एक राजनीतिक खेल बन गया व राजनीतिज्ञ खिलाड़ी। वर्तमान में सभी राजनीतिक दलों के नेता एवं पार्टियां अपने स्वार्थ एवं सत्ता लोलुपता के पीछे दौड़ लगा रहे हैं। गठबंधन सरकार का इतिहास स्वतंत्र भारत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अलग विघटन होने से शुरू हुआ। जनता दल, कांग्रेस और बाहरी सहायता से पहली बार 1977 में गठबंधन सरकार बनाई।

* सहायक आचार्य (गेस्ट फेकल्टी), राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

भारत में गठबंधन सरकारों का गठन (1977–वर्तमान)

अवधि	गठबंधन	प्रधानमंत्री (पार्टी)
1977–1979	जनता पार्टी	मोरारजी देसाई (कांग्रेस–(ओ))
1979–1980	जनता पार्टी (सेक्यूलर)	चरणसिंह (जनता (एस))
1989–1990	राष्ट्रीय मोर्चा	वी.पी.सिंह (जनता दल)
1990–1991	जनता दल सोशलिस्ट/समाजवादी जनता पार्टी	चन्द्र शेखर (जनता दल (एस)) या समाजवादी पार्टी)
1996–1997	संयुक्त मोर्चा	एच.डी.देवगौड़ा (जनता दल)
1997–1998	संयुक्त मोर्चा	आई.के.गुजराल (जनता दल)
1997–1998	भाजपा नेतृत्व वाला गठबंधन	ए.बी.वाजपेयी (भाजपा)
1999–2004	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए)	ए.बी.वाजपेयी (भाजपा)
2004–2009	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए)	मनमोहन सिंह (कांग्रेस)
2009–2014	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए.प्प)	मनमोहन सिंह (कांग्रेस)
2014–2019	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए)	नरेन्द्र मोदी (भाजपा)
2019–2024	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए)	नरेन्द्र मोदी (भाजपा)
2024–वर्तमान	राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए)	नरेन्द्र मोदी (भाजपा)

गठबंधन तालिका देखकर कह सकते हैं कि देश में एक ही राजनीतिक दल के बहुमत वाली गठबंधन सरकार का दौर पुनः चल पड़ा।

भारत में गठबंधन सरकारों की राजनीति के पीछे अनेक उत्तरदायी कारण है जो गठबंधन के लिए प्रेरित करते हैं–

- पहला कारण है सत्ता या शक्ति का प्रलोभन है जिसके कारण विपक्ष भी सरकार में आना चाहते हैं।
- दूसरा 'आर्थिक लालस' एक ऐसी बुराई है जो व्यवस्थापिका में विधायकों द्वारा अनेक बार राजनैतिक प्रतिबद्धता का त्याग कर व अपनी निष्ठाओं को छोड़कर धन प्राप्ति की ओर अग्रसर होना। विभिन्न दलों द्वारा यह सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया गया कि इस 'क्रॉस वोटिंग' के पीछे धन–बल की भूमिका रही है।
- दलबदल की राजनीति ने भी दलीय निष्ठाओं को आघात पहुंचाया व पूँजी के आधार पर सत्ता की प्राप्ति को एक साधन बना भारतीय राजनीति को दूषित व दिग्भ्रमित कर दिया।
- भारतीय राजनीति की गठबंधन व्यवस्था में अधिकांश राज्यों एवं केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में जाति का वर्चस्व रहता है। भारत में चाहे विविधता में एकता के रूपक में रूप में अंकित किया जाए, किन्तु भारतीय राजनीति को कलुषित करने, संशययुक्त आवरण देने का प्रमुख कारण जातीयता भी रहा है। जाति गठबंधन सरकार के आधार पर सभी दलों में उम्मीदवारों का चयन होता है।
- नेहरू के निधन के बाद कांग्रेस में नेतृत्व की प्रभावक्षीणता का क्षरण व संगठनात्मक विघटन के कारण नेताओं ने अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए अलग होकर अपने गुट व पार्टियां बना दी जिससे कांग्रेस का एक छत्र संगठन बिखर गया। कांग्रेस के विघटन से अनेक नेताओं एवं पार्टियों को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका मिला।
- भारतीय राजनीति मं गठबंधन तब अधिक सक्रिय हुए जब कांग्रेस के केन्द्रय नेतृत्व की शक्ति अधिक बढ़ गई। केन्द्रीयकरण की प्रवृति के परिणाम स्वरूप राजनीतिक कार्यकर्ताओं का प्रभाव कम होने से संगठन में विरोध व आक्रोश के परिणामस्वरूप अपने आत्म सम्मान के लिए अलग हो गए।
- राजनीतिक दलों के अधिकांश सदस्य समुचित प्रशिक्षण व सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा के अभाव के कारण नीतियों व कायक्रमों के निरूपण में योगदान नहीं देते। जब दलीय आदर्श, बंधन, अनुशासन के अभाव

में तो दलीय आत्मीयता, दलीय आत्मोर्त्सग की भावना भी नहीं पनप पाती है अतः दल विशेष से टूटने का नेताओं या कार्यकर्ताओं को कोई विशेष दुख नहीं होता है क्योंकि दल निर्णय से उनकी सम्बद्धता भावनात्मक लगाव या वैचारिक आग्रहों को प्रतिबिम्बित नहीं करती, अपितु व्यवहारिक परिस्थितियों व कार्य–साधक प्राथमिकताओं का परिणाम होता है।

वर्तमान राजनीतिक दलों के नेतृत्व एवं राजनेताओं के अपने निजी हितों एवं स्वार्थ (सत्ता एवं शक्ति) प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक अपने नैतिकता को एक तरफ रखकर पार्टी को समर्थन या विरोध कर सकते हैं। जिससे सत्तारूढ़ पार्टी को सरकार में बहुमत बनाये रखने के लिए अन्य पार्टियों का विघटन करके अपने साथ लाने का प्रयास करते हैं जिसे गठबंधन को बढ़ावा मिलता है।

भारत में गठबंधन सरकारों की विशेषताएं/लक्षण

भारत में गठबंधन सरकारों के अब तक (1977 से 2024) के अनुभव के आधार पर निम्न विशेषताएं देखने को मिलती है–

- भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में केन्द्रीय स्तर पर अब तक जितनी भी सरकारें बनी, वे लगभग कुछ अपवाद को छोड़कर सभी अल्पकालीन रहीं है। गठबंधन की सरकारों के घटक दलों के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न होने पर सरकार की स्थिरता खतरे में पड़ जाती है।
- कांग्रेस के प्रभुत्व में कमी के कारण और उसका विघटन ने गठबंधन को बढ़ावा दिया।
- भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकारों में ध्रुवीकरण का अभाव दिखाई देता है जिससे उनमें राजनीतिक वैचारिक आग्रहों का पतन व अवसरवादी राजनीति का प्रतीक है।
- संसदीय सिद्धान्तों की अवहेलना कर सरकार की नीतियों को लेकर घटक दलों में मतैक्य का अभाव, मंत्रियों का परस्पर आरोप प्रत्यारोप व आलोचना में लिप्त रहना, इस प्रकार घटक दल संसदीय नियमों का पालन नहीं करते हैं। आजकल आये दिन सरकार के घटक दल के सरकार के विपक्ष में बयानबाजी करते रहते हैं। संसदीय सिद्धान्तों की अवहेलना देखने को मिलती है।
- गठबंधन सरकारों में प्रधानमंत्री पद की गरिमा का ह्रास होता रहा है। उनकी स्थिति एवं प्रभाव दोनों में कमी देखने को मिलती है। गठबंधन सरकारों में वर्तमान परिदृश्य में प्रधानमंत्री के स्वरूप में परिवर्तन आया है। गठबंधन की राजनीति की अर्न्तनिहित बाध्यताओं के कारण प्रधानमंत्री को सरकार के नेतृत्वकर्त्ता की बजाय संघटकों के मध्य समन्वयकर्त्ता या प्रतिद्वन्द्वी आग्रहों के मध्य समायोजन विस्थापित करने वाले व्यक्ति की भूमिका का निर्वाहन करना पड़ रहा है।
- गठबंधन सरकारों में मंत्रिमण्डल का महत्व एवं स्तर घट जाता है क्योंकि घटक दल अपनी सत्ता लालसा एवं स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ पाते हैं जब भी मौका मिलता है सरकार से समर्थन वापस लेने की धमकी देते रहते हैं।
- गठबंधन की सरकार हमेशा तनाव में रहती है। अपनी सरकार को बचाने में राष्ट्रीय हितों को देख नहीं पाती है।
- भारतीय राजनीति में गठबंधन की सरकारों में केन्द्र–राज्य मतभेद की स्थिति बनी रहती है।
- गठबंधन सरकारों को दलबदल की राजनीति का सामना करना पड़ता रहता है। 'आया राम गया राम' चलता रहता है।
- सत्ता प्राप्ति की लालसा में विचारधारा विरोधी होने के बावजूद भी एक मंच पर आ जाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जाते हैं जैसे– महाराष्ट्र में शिव सेना एकदम विपरीत विचारधारा वाली होने के बाद भी कांग्रेस व शरद पंवार पार्टी से हाथ मिलाकर मुख्यमंत्री बन गये।

- भारतीय राजनीति गठबंधन सरकारों में जाति, सत्ता लोलुपता, धन–बल, क्रॉस वोटिंग, अनुशासनहीनता, दलीय आत्मीयता का अभाव, केन्द्रीयकृत राजनीति अनेक ऐसी बातें है तो गठबंधन सरकारों पर हावी होती है। गठबंधन को बनाये रखने के लिए ऐन–केन–प्रकारेण निरन्तर प्रयास चलता रहता है जिसे देश हित एवं निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होती है।
- गठबंधन चुनाव से पहले एवं चुनाव के बाद भी बनते हैं। चुनाव से पहले गठबंधन चुनाव साथ मिलकर लड़ते हैं एवं चुनाव के बाद वाले गठबंधन प्रधान दल की स्थिति देखकर उस दल का साथ सत्ता में भागीदारी के लिए शामिल होते हैं।
- भारत में गठबंधन सरकारों की विशेषताएं है कि एक गुट कांग्रेस दल को सत्ता से दूर रखना और दूसरा गुट है जो भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से दूसर रखना। एक तरह से निषेधात्मक आधार पर गुटों का निर्माण हुआ है। इनमें वैचारिक एकता का अभाव है। इससे मंत्रिमण्डल और प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा का ह्रास हुआ है इसे दलबदल एवं केन्द्र–राज्य में मतभेद व तनाव को देखने को मिलता है एवं राजनीतिक अस्थिरता सदैव बनी रहती है।

गठबंधन सरकारों के दोष

- गठबंधन सरकार का पहला दोष है कि वे अस्थिर है या अस्थिरता की ओर प्रवृत्त है। गठबंधन के सदस्यों के बीच मतभेद सरकार के पतन का कारण बनता है।
- प्रधानमंत्री का नेतृत्व संसदीय शासन प्रणाली का एक सिद्धान्त है। गठबंधन सरकार में यह सिद्धान्त सीमित हो जाता है क्योंकि प्रधानमंत्री कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले गठबंधन सहयोगियों से परामर्श करना पड़ता है।
- गठबंधन सहयोगियों की संचालन समिति या समन्वय समिति 'सूपर कैबिनेट' के रूप में कार्य करती है और इस प्रकार यह सरकारी मशीनरी के कामकाज में कैबिनेट की भूमिका और स्थिति को कमजोर करती है।
- गठबंधन सरकार के छोटे घटक दलों के 'किंग मेकर' की भूमिका निभाने की सम्भावना है। वे संसद में संख्याबल से भी अधक मांग करते है।
- क्षेत्रीय दलो के नेता अपने क्षेत्र के विशिष्ट मुद्दों की वकालत करके राष्ट्रीय निर्णय को प्रभावित करते है तथा गठबंधन वापसी के खतरे के तहत अपने हितों के अनुरूप कार्य करने के लिए केन्द्र सरकार पर दबाव डालते हैं।
- क्षेत्रीय दलों के नेता राष्ट्रीय निर्णय लेने में क्षेत्रीय तथ्यों को सामने लाते हैं। वे केन्द्रीय कार्यकारिणी पर अपने हिसाब से काम करने का दबाव बनाते हैं, अन्यथा वे गठबंधन से हटने की धमकी देते हैं।
- गठबंधन सरकारों के सदस्य प्रशासनिक विफलताओं और चूकों की जिम्मेदारी नहीं लेते। वे दोषारोपण का खेल, खेलते है ताकि सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से बच सके।
- नैतिकता एवं विचारधारा का अंत उसके स्थान पर धर्म, जाति, क्षेत्र एवं स्वार्थ की राजनीतिक विकास व योजनाओं के समन्वित प्रयासों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- नौकरशाही की शक्तियों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- संसदीय शासन का मूलभूत लक्षण मंत्रियों के सामूहिक उत्तरदायित्व का गठबंधन सरकारों में ह्रास हुआ है। गठबंधन सरकार के घटकों में कार्यरत समरसता के अभाव ने इस प्रक्रिया को बाधा पहुंचायी है।

गठबंधन सरकारों के गुण

गठबंधन सरकारों के दोष के साथ कुछ गुण भी है जो लोकतंत्र एवं विविधता वाले देश के हित में हो सकते हैं–

- सरकार के कामकाज में विविध हितों को समायोजित किया जाता है।
- गठबंधन सरकार विभिन्न समूहों की अपेक्षाओं को पूरा करने और उनकी शिकायतों का निवारण करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है।
- भारत एक अत्यन्त विविधतापूर्ण देश है। यहां विभिन्न संस्कृतियां, भाषाएं, जातियां, धर्म और जातीय समूह है। इसका मतलब है कि गठबंधन सरकार की प्रकृति अधिक प्रतिनिधि की होती है और मतदाताओं की लोकप्रिय राय को दर्शाती है।
- गठबंधन सरकार में अलग–अलग राजनीतिक दल होते हैं जिसे अपनी विचारधारा या एजेंडा होता है। लेकिन सरकार की नीति के लिए गठबंधन के सभी सहयोगियों की सहमति की आवयकता होती है इसलिए गठबंधन सरकार आम सहमति आधारित राजनीति की ओर ले जाती है।
- गठबंधन की राजनीति भारतीय राजनीति व्यवस्था के संघीय ढांचे को मजबूत बनाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि गठबंधन सरकार क्षेत्रीय मांगों के प्रति अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी होती है।
- गठबंधन सरकार निरंकुश शासन की सम्भावनाओं को कम करती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सरकार के कामकाज में एक ही राजनीतिक दल का दबदबा कम हो जाता है। गठबंधन के सभी सदस्य निर्णय में भाग लेते हैं।
- गठबंधन सरकार विभिन्न दलों को एक साथ लाकर संतुलित निर्णय लेती है तथा विभिन्न हितधारकों के हितों को संतुष्ट करती है।
- गठबंधन सरकार के उदय के पश्चात राजनीतिक एकाधिकार का अंत हुआ एवं बहु–ध्रुवीय व्यवस्था का उदय हुआ।
- गठबंधन सरकार होने से राजनीतिक एकाधिकार के पतन के साथ–साथ ही आर्थिक एकाधिकार का भी अंत हुआ तथा समाज के सभी वर्गों का सत्ता व आर्थिक साधनों को संचालित करने का अवसर मिला तथा उन्हें आर्थिक आधार पर लाभ प्राप्त हुआ।

सुझाव और निष्कर्ष

केन्द्र एवं राज्य स्तर पर मिलीजुली सरकारों का प्रयोग आज से लगभग 50 वर्ष पहले अपनाया गया था। केन्द्रीय स्तर पर सबसे पहली गठबंधन सरकार 1977–979 तक जनता पार्टी के नेता मोरारजी देसाई (कांग्रेस ओ.) ने बनायी तक से आज तक गठबंधन सरकारों का सिलसिला थमा नहीं है। गठबंधनों में जनता पार्टी, एनडीए और यूपीए शामिल है। वर्तमान में 13 वीं गठबंधन सरकार (एनडीए) के नेता श्री नरेन्द्र मोदी है जो गठबंधन सरकार चला रहे हैं। गठबंधन सरकार निराशा एवं असफलता के अलावा और कुछ नहीं दे पायी है, फिर भी भारत में बहुदलीय व्यवस्था मे एक दल की प्रधानता को लगभग समाप्त हो गई है, सही और सम्पूर्ण अर्थों में कोई भी राजनीतिक दल अखिल भारतीय दल नहीं है। इसके परिणामस्वरूप 'त्रिशंकु लोकसभा और खण्डित जनादेश' की महामारी ने अब केन्द्र को ग्रसित कर लिया है। गठबंधन सरकारों की परिधि में ही हमें भविष्य के लिए मार्ग खोजना होगा। राजनीति 'सम्भावनाओं का खेल' और 'परिस्थितियों पर निर्भर गतिशील कला' है, अतः अन्तिम रूप से कुछ कह पाना तो सम्भव नहीं है, लेकिन सफलता के लिए कुछ सुझाव अवश्य ही दिए जा सकते हैं–

- पारस्परिक सम्मान, मजबूत नेतृत्व और राष्ट्रीय प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने की नींव पर निर्मित एक सुचारू रूप से कार्य करने वाला गठबंधन, एक जीवंत लोकतंत्र की जटिलताओं से निपट सकते हैं।
- 'बाहरी समर्थन के आधार पर कार्यरत अल्पमतीय और सूक्ष्ममतीय सरकारों का प्रयोग असफल सिद्ध हुआ है।' अतः बाहरी समर्थन के बजाय उन्हें सरकार में शामिल होने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

- अंतर्निहित चुनौतियों के बावजूद, गठबंधन सरकारें विविध मतों के लिए एक मंच प्रदान करती है और सर्वसम्मति से संचालित नीतियों को बढ़ावा दे सकती है।
- न्यायमूर्ति एम.एन.वेकंटचलैया आयोग की रिपोर्ट में स्थायी गठबंधन का विचार सुझाव दिया गया है कि बेहतर होगा कि भारत में सभी सरकारें, सभी स्तरों पर अनिवार्य रूप से 50: से अधिक वोट शेयर करने वाली सरकार को ही शासन करने की आवश्यक वैधता प्राप्त होगी।
- जब 'चुनाव पूर्व गठबंधन' के आधार पर सरकारें गठित होगी, तो उन्हें जनादेश की शक्ति और वैधता दोनों प्राप्त होगी। गठबंधन सरकार को उसके स्वाभाविक रूप से अपनाया जाना चाहिए।
- गठबंधन सरकार के नेतृत्व का कार्य एक दल की सरकार का नेतृत्व करने की तुलना में निश्चित रूप से अधिक कार्य कठिन है। इसलिए गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने वाला नेता, नेतृत्व कुशल, अधिक परिपक्व व वरिष्ठ राजनीतिज्ञ के द्वारा किया जाना चाहिए।
- गठजोड़ में शामिल होने वाली पार्टियों को नीतियों और विचारों के मामले में होने वाले सम्भावित टकरावों से निपटने के लिए एक सर्वमान्य तरीका पहले से ही तय कर लेना चाहिए।
- भारतीय संविधान और राज व्यवस्था के विद्वानों तथा राजनीतिक दलों के नेताओं के बीच मिलीजुली सरकारों का गठन और कार्यकरण की समस्त प्रक्रिया पर गम्भीर विचार–विमर्श कर अपने देश की राजनीतिक परिस्थितियों और राजनीतिक संस्कृति के अनुरूप मार्ग खोजना होगा, तभी गठबंधन सरकारों को सार्थक बना सकते हैं। भारतीय लोकतंत्र का मिजाज ही गठबंधनवादी है। देश की बहुलतावादी संस्कृति और विविधतावादी पहचान गठबंधन की राजनीति के तहत ही इसके लोकतंत्र में पूरी तरह परिलक्षित है। समस्या गठबंधन से नहीं बल्कि गठबंधन धर्म, लोकतांत्रिक संस्कारों के उल्लंघन से है। भारत विविधता वाला देश है इसकी पूर्ति गठबंधन की राजनीति से ही सम्भव है। सबका साथ, सबका विकास एवं सबका विश्वास सार्थक गठबंधन सरकार से ही सम्भव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. काश्यप तथा गुप्त– राजनीतिक कोश
2. Tiwari, L.N Coaliation Pattern in Coliation Politics in India (ed) Karunakaran K.P.
3. प्रो. बी.एल.फड़िया– भारत में मिलीजुली सरकारों की राजनीति 'भारतीय शासन एवं राजनीति'।
4. बालेन्द्र सिंह– 'भारत की साझा सरकारें एवं क्षेत्रीय दल', अध्याय–5, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में साझा सरकार : आवश्यकता, चुनौतियां एवं सम्भावनाएं।
5. डॉ. रूपा मंगलानी– भारतीय शासन एवं राजनीति
6. डॉ. पुखराज जैन– भारतीय संविधान और शासन की समझ– गठबंधन सरकारें।
7. Gupta D.C., Indian Government and Politics.

❖◆❖